# नक्षत्र के बारे में जानकारी

हम अक्सर सुनते हैं कि 'ग्रह नक्षत्र ठीक नहीं चल रहे' या फिर 'सारा खेल तो ग्रह नक्षत्रों का है' यानी किस्मत को मानने वालों के लिए ग्रह-नक्षत्र बहुत मायने रखते हैं। वैदिक ज्योतिष शास्त्र तो पूरी तरह ग्रह नक्षत्रों पर ही आधारित है। आखिर ये ग्रह नक्षत्र हैं क्या और कैसे इनसे जुड़ा है हमारी किस्मत का कनेक्शन। नौ ग्रहों का हमारी किस्मत पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा हम पहले कर चुके हैं। आज जानने की कोशिश करते हैं नक्षत्रों के बारे में। वैदिक ज्योतिष में नक्षत्रों का सिद्धांत काफी अहम है। इसे पूरी दुनिया में प्रचलित तमाम ज्योतिष पद्धतियों की तुलना में सबसे ज्यादा सटीक और अचूक माना जाता है।

## क्या हैं नक्षत्र ?

दरअसल हम जब अंतरिक्ष विज्ञान या अंतरिक्ष शास्त्र की बात करते हैं तो चंद्रमा या तमाम ग्रहों की गति या चाल से बनने वाले समीकरणों की बात होती है। अंतरिक्ष में चंद्रमा की गति और पृथ्वी के चारों ओर घूमने की या परिक्रमा करने की प्रक्रिया अनवरत चलती है। चंद्रमा पृथ्वी की पूरी परिक्रमा 27.3 दिनों में करता है और 360 डिग्री की इस परिक्रमा के दौरान सितारों के 27 समूहों के बीच से गुजरता है। चंद्रमा और सितारों के समूहों के इसी तालमेल और संयोग को नक्षत्र कहा जाता है।

जिन 27 सितारों के समूह के बीच से चंद्रमा गुजरता है वही अलग अलग 27 नक्षत्र के नाम से जाने जाते हैं। यानी हमारा पूरा तारामंडल इन्हीं 27 समूहों में बंटा हुआ है। और चंद्रमा का हर एक राशिचक्र 27 नक्षत्रों में विभाजित है। किसी भी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में होगा या सितारों के जिस समूह से होकर गुजर रहा होगा वही उसका जन्म नक्षत्र माना जाता है। और यही आपकी किस्मत की चाभी होती है।

## कौन-कौन से हैं 27 नक्षत्र

अश्विन नक्षत्र, भरणी नक्षत्र, कृत्तिका नक्षत्र, रोहिणी नक्षत्र, मृगशिरा नक्षत्र, आर्द्रा नक्षत्र, पुनर्वसु नक्षत्र, पुष्य नक्षत्र, आश्लेषा नक्षत्र, मघा नक्षत्र, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, हस्त नक्षत्र, चित्रा नक्षत्र, स्वाति नक्षत्र, विशाखा नक्षत्र, अनुराधा नक्षत्र, ज्येष्ठा नक्षत्र, मूल नक्षत्र, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, श्रवण नक्षत्र, घनिष्ठा नक्षत्र, शतभिषा नक्षत्र, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, रेवती नक्षत्र।

## नक्षत्र और राशि के बीच क्या अंतर है?

यदि आप आकाश को 12 समान भागों में विभाजित करते हैं, तो प्रत्येक भाग को राशि कहा जाता है, लेकिन अगर आप आकाश को 27 समान भागों में विभाजित करते हैं तो प्रत्येक भाग को नक्षत्र कहा जाता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि आकाश किसी भी वृत्तीय आकार की तरह 360 डिग्री का होता है। अब यदि हम 360 डिग्री को 12 भागों में बांटते हैं, तो हमें एक राशि चिह्न 30 डिग्री के रूप में प्राप्त होता है। इसी प्रकार, नक्षत्रों के लिए, यदि हम 360 डिग्री को 27 भागों बांटते हैं, तो एक नक्षत्र 13.33 डिग्री (लगभग) के रूप में आती है। इसलिए, नक्षत्रों की कुल संख्या 27 और राशियों की कुल संख्या 12 होती है। अगर देखा जाए तो नक्षत्र एक छोटा-सा हिस्सा है और राशि एक बड़ा हिस्सा होता है। किसी भी राशि चिह्न में सवा दो नक्षत्र आते हैं।

## कैसे ज्ञात करते हैं नक्षत्र?

जैसा कि हम सभी जानते हैं जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में स्थित होता है, वही उस व्यक्ति का जन्म नक्षत्र होता है। यदि किसी व्यक्ति के वास्तविक जन्म नक्षत्र की जानकारी हो तो उस व्यक्ति के बारे में बिलकुल सही भविष्यवाणी की जा सकती है। आपके नक्षत्रों की सही गणना आपको काफी लाभ पहुंचा सकती हैं। साथ ही आप अपने अनेक प्रकार के दोषों और नकारात्मक प्रभावों को दूर करने के उपाय भी ढूंढ सकते हैं। सभी नक्षत्रों के अपने शासक ग्रह और देवता होते हैं। विवाह के समय भी वर और वधू का कुंडली मिलान करते समय नक्षत्र का सबसे अधिक महत्व होता है।

# 1.अश्वनी

**राशि: मेष**

**नक्षत्र देवता: अश्विनीकुमार**

**नक्षत्र स्वामी: केतु**

ज्योतिष शास्त्र में सबसे प्रमुख और सबसे प्रथम अश्विन नक्षत्र को माना गया है। अश्वनी नक्षत्र में जन्मे जातक सामान्यतः सुन्दर ,चतुर, सौभाग्यशाली एवं स्वतंत्र विचारों वाले और आधुनिक सोच के लिए मित्रों में प्रसिद्ध होते हैं। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति बहुत ऊर्जावान होने के सथ-साथ हमेशा सक्रिय रहता है। इनकी महत्वाकांक्षाएं इन्हें संतुष्ट नहीं होने देतीं। ये लोग सभी से बहुत प्रेम करने वाले,

हस्तक्षेप न पसंद करने वाले, रहस्यमयी प्रकृत्ति के होते हैं। ये लोग अच्छे जीवनसाथी और एक आदर्श मित्र साबित होते हैं।

## शिक्षा और आय

आपको हरफ़नमौला कहा जा सकता है, यानी सभी बातों में आपकी कुछ-न-कुछ पैठ ज़रुर होगी। शिक्षा के क्षेत्र में आपको पर्याप्त सफलता मिल सकती है और चिकित्सा, सुरक्षा विभाग, पुलिस विभाग, सेना, गुप्तचर विभाग, इंजीनियरिंग, अध्यापन, प्रशिक्षण आदि क्षेत्रों में भी आप हाथ आज़मा सकते है। साहित्य और संगीत के प्रति भी आपका ख़ासा लगाव होगा और आपकी आय के साधन भी एक से अधिक हो सकते हैं। तीस वर्ष की आयु तक आपको काफ़ी उतार-चढ़ाव देखने पड़ सकते हैं।

## पारिवारिक जीवन

अपने परिवार से आप बेहद प्यार करते हैं लेकिन हो सकता है कि पिता की तरफ़ से आपका मन-मुटाव रहे, परन्तु मातृपक्ष के लोग आपकी मदद के लिए हमेशा तैयार रहेंगे और परिवार से बाहर के लोगों से भी आपको काफ़ी मदद मिलेगी। आपका वैवाहिक जीवन सुखी दिखता है। पुत्रियों की अपेक्षा पुत्रों की संख्या अधिक हो सकती है।

**प्रथम चरण :** इसका स्वामी मंगल है। यह शारारिक क्रिया, साहस, प्रेरणा, प्रारम्भ का द्योतक है। जातक मध्यम कद, बकरे जैसा मुंह, छोटी नाक और भुजा, कर्कश आवाज, संकुचित नेत्र, कृश, धायल अथवा नष्ट अंग वाला होता है। इसके गुणदोष - शारारिक सक्रियता, साहस, प्रोत्साहन, आवेगी बली। भावनावश परिणाम की बिना चिंता कार्य है। जातक नृप सामान, निर्भीक, साहसी, अफवाहो के प्रति आकर्षित, मितव्ययी, वासनायुक्त, भावुक होता है।

**द्वितीय चरण :** इसका स्वामी शुक्र है। यह अवबोध, अविष्कार, साकार कल्पना का द्योतक है। जातक श्याम वर्णी, चौड़े कन्धे, लम्बी नाक, लम्बी भुजा, छोटा ललाट, खिले नेत्र, मधुर वाणी, कमजोर जोड़ वाला होता है। इसके गुणदोष - अवबोध, आविष्कारी, अश्विनीकुमार जैसी सदभावना, कल्पनाओ को साकार करना है। जातक धार्मीक, हंसमुख, धनवान होता है।

**तृतीय चरण :** इसका स्वामी बुध है। यह विनोद, संचार, फुर्ती, व्यापकता का द्योतक है। जातक काले बिखरे बाल, सुन्दर नेत्र व नाक, गौर वर्ण, वाकपटु, पतले जांध व नितम्ब वाला होता है।इसके गुणदोष - विनोद, आदान-प्रदान, विस्तीर्ण योग्यता, दिमागी फुर्ती है। जातक विद्वान, ज्ञानवान, भोजन प्रेमी, भौतिकवादी, अशांत, तर्क आधारी, साहसिक होता है।

**चतुर्थ चरण :** इसका स्वामी चन्द्र है। यह चेतना, भावुकता, सहानुभूति का द्योतक है। जातक व्याकुल नेत्र, साहसी, ठिगना, नट अथवा नृत्यक, भ्रमणशील; खुरदरे नख, विरल कड़े रोम, कृश, भाई

हीन होता है।इसके गुणदोष - सामूहिक चेतना, महत्व, जानकारी, भावुकता है। जातक ईश्वर से डरने वाला, धार्मिक, पौरुषयुक्त, स्त्री संग प्रेमी, चरित्रवान, गुरुभक्त होता है।

# 2.भरणी

**राशि: मेष**

**नक्षत्र देवता: यम आद्य पितर**

**नक्षत्र स्वामी: शुक्र**

इस नक्षत्र का स्वामी शुक्र ग्रह होता है, जिसकी वजह से इस नक्षत्र में जन्में लोग एक दृढ़ निश्चयी, चतुर, सदा सत्य बोलने वाले, आराम पसंद और आलीशान जीवन जीने वाले होते हैं। ये लोग काफी आकर्षक और सुंदर होते हैं, इनका स्वभाव लोगों को आकर्षित करता है। इनके अनेक मित्र होंगे और मित्रों में बहुत अधिक लोकप्रिय भी होंते है। इनके जीवन में प्रेम सर्वोपरि होता है और जो भी ये ठान लेते हैं उसे पूरा करने के बाद ही चैन से बैठते हैं। इनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और सम्मान हमेशा बना रहता है।

## शिक्षा और आय

आप संगीत, नृत्य, गायन, चित्रकारी व अभिनय के क्षेत्र, मनोरंजन व रंगमंच से जुड़े कार्य, मॉडलिंग, फ़ैशन डिज़ाइनिंग, फ़ोटोग्राफ़ी व वीडियो एडिटिंग, रूप व सौंदर्य से जुड़े व्यवसाय, प्रशासनिक कार्य, कृषि अर्थात खेती-बाड़ी का कार्य, कला-विज्ञापन, वाहन से जुड़े कार्य, होटल से जुड़े कार्य, न्यायधीश और वक़ालत आदि से जुड़े क्षेत्रों में विशेष सफल हो सकते हैं। धन-संग्रह करने में भी आपकी विशेष रुचि है।

## पारिवारिक जीवन

अपने परिवार से आप अत्यधिक प्रेम करते हैं और उनसे एक दिन भी अलग नहीं रहना चाहते। 23 वर्ष से 27 वर्ष में आपका विवाह होने की संभावना है। अपने परिवार की ज़रूरतों के मुताबिक़ आप

ख़ूब ख़र्च करते हैं क्योंकि अपने परिवार की हर छोटी-बड़ी ज़रूरतों को पूरा करना आपको महत्वपूर्ण लगता है। अपने जीवनसाथी से आपको पूरा स्नेह, भरपूर सहयोग व विश्वास मिलेगा। अपने परिवार में बड़े-बूढ़ों का भी आप ख़ूब आदर करते हैं और अपने परिवार के हर सदस्य की ज़रूरतों का पूरा ख़याल रखते हैं। इसी वजह से आपका पारिवारिक जीवन भी काफ़ी ख़ुशहाल रहने की संभावना है।

**प्रथम चरण :** इसका स्वामी सूर्य है।जातक सिंह के सामान आँखे, मोटी नाक, छोड़ा ललाट, घनी भोंहे, घने पतले रोम, आगे का फैला शरीर होता है। इसकी शिक्षा अच्छी होती है, यह ज्योतिषी, न्यायाधीश, आध्यात्म अध्यापक, नर्सरी टीचर आदि हो सकता है। जातक अहंकारी, कठोर प्रकृति वाला, शत्रुओ से रक्षा करने वाला, विशाल, चोरी की प्रवृत्ति वाला होता है।

**द्वितीय चरण :** इसका स्वामी बुध है। जातक श्याम वर्ण, मृग सामान नेत्र, पतली कमर, कठोर पैर के पंजे, मोटा-लटकता पेट, मोटी भुजा व कंधे, डरपोक, बकवादी, सुयोग्य नृत्यक, डांस टीचर होता है।जातक विपरीत लिंग का आशिक़, चतुर, मूर्तिकला का ज्ञानी, धर्मिक होता है। इस पाद मे प्रेम विवाह की सम्भावना रहती है।

**तृतीय चरण :** इसका स्वामी शुक्र है। नवमांश तुला। समय मे सहमत होना या एक ही समय मे अनेक कार्य होना, अवधि विहीन प्रेम और रति, विपरीत लिंग का अत्यधिक आकर्षण,भिलाषा की पूर्ति इसके गुणधर्म है।जातक कड़े रोम वाला, चंचल, धवल नेत्र, रति निरत, कुलटा स्त्री का पति, हत्यारा, विशाल शरीर वाला होता है।जातक घमंडी, योगीन्द्र, पंडित, सामान्य स्वभावी, स्वयं का उद्योग करने वाला, अत्यधिक कामुक और कामातुर, वाचाल होता है।

**चतुर्थ चरण :** इसका स्वामी मंगल है। नवमांश वृश्चिक। अत्यधिक ऊर्जा, रूकावट इसके गुणधर्म है।जातक वानर मुखी, भूरे केश, गुप्तरोग रोगी, हिंसक, असत्यवादी, धातादिक योग, मित्र से सदव्यवहारी होता है। यह विस्फोटक ऊर्जावान होता है, यदि ऊर्जा का प्रवाह ठीक हो, तो जातक अन्वेषक या अविष्कारक, स्त्री रोग विशेषज्ञ, छायाकार, पैथालॉजिस्ट, जासूस होता है।

# 3.कृत्तिका

**राशि: मीन,मेष वृषभ**

**नक्षत्र देवता: अग्नी**

**नक्षत्र स्वामी: रवि**

इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति पर सूर्य का प्रभाव रहता है, जिसकी वजह से ये लोग आत्म गौरव करने वाले होते हैं। इस नक्षत्र में जन्में जातक सुन्दर और मनमोहक छवि वाला होता है। वह केवल सुन्दर ही नहीं अपितु गुणी भी होते हैं। ना तो पहली नजर में प्यार जैसी चीज पर भरोसा करते हैं और ना ही किसी पर बहुत जल्दी एतबार करते हैं। इन लोगों का व्यक्तित्व राजा के समान ओजपूर्ण एवं पराक्रमी होता है। ये तेजस्वी एवं तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी, स्वाभिमानी, तुनक मिजाजी और बहुत उत्साहित रहने वाले होते हैं। ये लोग जिस भी काम को अपने हाथ में लेते हैं उसे पूरी लगन और मेहनत के साथ पूरा करते हैं।

## शिक्षा और आय

आप प्राय: अपने जन्म-स्थान पर नहीं टिकेंगे और रोज़गार के सिलसिले में परदेश जा सकते हैं। चिकित्सा, इंजीनियरिंग, दवाइयों से जुड़े क्षेत्र, आभूषण-निर्माण सम्बंधित कार्य, विश्वविद्यालय के उच्च अधिकारी या विभागाध्यक्ष, वकील, न्यायाधीश, सेना, पुलिस या सुरक्षा बल में नौकरी, अग्निशमन अधिकारी, पालना-घर, अनाथ आश्रम से जुड़े कार्य, व्यक्तित्व निखारने व आत्मविश्वास बढ़ाने से सम्बंधित कार्य, आध्यात्मिक गुरु या उपदेशक, अग्नि से जुड़े व्यवसाय जैसे हलवाई, बेकरी, वैल्डिंग, ढलाई का काम, सिलाई-कढ़ाई, दर्जी, चीनी मिट्टी या सिरेमिक की वस्तुएँ बनाने वाले तथा वे सभी कार्य जिसमें आग या तेज़ धार वाले औज़ारों का प्रयोग होता हो आप उन्हें करके सफल हो सकते है।

## पारिवारिक जीवन

आपका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा। जीवनसाथी गुणवान, समर्पित, निष्ठावान और घरेलू कार्य में निपुण होगा। इतने अनुकूल घरेलू वातावरण के बावजूद जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपकी चिंता का

विषय हो सकता है। आपका जीवनसाथी पूर्व परिचित हो सकता है। प्रेम विवाह की भी संभावना है। आप अपनी माता से विशेष लगाव रखते है और आपको अपनी माता से अन्य भाई व बहनों की अपेक्षा अधिक स्नेह मिलेगा। संभव है कि जीवन 50 वर्ष की आयु तक विशेष संघर्षशील रहे, लेकिन उसके उपरांत 50 वर्ष से 56 वर्ष की उम्र का समय बहुत अच्छा बीतेगा।

**प्रथम चरण** : इसका स्वामी सूर्य है। इसमे मंगल,शनि,सूर्य का प्रभाव है। नवमांश सिंह। यह अंतरंग प्रत्यक्षीकरण,गर्व,वृत्ति उन्मुखता का द्योतक है। जातक लम्बी भुजा, चौड़ा वक्ष, लाल उग्र नेत्र,अल्प केश,बलवान का वध करने वाला, साहसी कर्म करने वाला होता है।जातक व्यावसायिक योग्यता के लिए **आतुर**, लगातार सीखने और नीचे की पंक्ति मे सुधार के लिए अर्जित ज्ञान का उपयोग करने वाला, अनुशासित, प्रायोगिक होता है।ये आमतौर पर परिवार या पेशे का विकल्प चुनने में अटक जाते है।

**द्वितीय चरण :** इस चरण का स्वामी बुध हैं। इस नक्षत्र में जन्मा जातक धार्मिक स्वभाव का होता है।बुध लग्न स्वामी मंगल का शत्रु है। बुध में शनि का अंतर एवं शनि में बुध का अंतर शुभ फलदायी होगा।परन्तु शनि में मंगल या मंगल में शनि का अंतर अशुभ फल देगा।मंगल की दशा में जातक उन्नति करेगा।

**तृतीय चरण :** इसका स्वामी शुक्र है। इसमे मंगल, शनि,शुक्र का प्रभाव है।नवमांश तुला। जातक श्याम वर्ण, असित (मटमैले)नेत्र,दूसरे की स्त्री के साथ विश्वास घाती,भ्रमण शील, धैर्यवान,नट,साहसी होता है।जातक सामाजिक, बहु मित्र वाला,अच्छा ज्योतिषी होता है। जातक का खोजी दिमाग पूरी तरह ज्योतिष की ओर निर्देशित होता है।वह अच्छा ज्योतिषी या अंक ज्योतिषी बन जाता है।कुछ प्रतिकूल मामलो मे देखा गया है कि जातक जीवन पथ से भटक जाता है और पारिवारिक जीवन मे बुरी तरह असफल होता है।

**चतुर्थ चरण :** इस चरण का स्वामी मंगल हैं। इस नक्षत्र में जन्मा जातक प्रायः नपुंसक होता है।अनुराधा नक्षत्र के चौथे चरण का स्वामी मंगल है तथा लग्न स्वामी भी मंगल है अतः मंगल की दशा अनार्दशा जातक को उत्तम फल देगी। शनि की दशा माध्यम फल देगी क्योंकि शनि और मंगल में शत्रुता है।

# 4.रोहिणी

**राशि: वृषभ**

**नक्षत्र देवता: ब्रम्हा**

**नक्षत्र स्वामी: चंद्र**

इरोहिणी नक्षत्र का स्वामी चंद्रमा होता है और चंद्रमा के प्रभाव की वजह से ये लोग काफी कल्पनाशील और रोमांटिक स्वभाव के होते हैं। ये लोग काफी चंचल स्वभाव के होते हैं और स्थायित्व इन्हें रास नहीं आता। इन लोगों की सबसे बड़ी कमी यह होती है कि ये कभी एक ही मुद्दे या राय पर कायम नहीं रहते। ये व्यक्ति सदा दूसरों में गलतियां ढूँढता रहता है। सामने वाले की त्रुटियों की चर्चा करना इनका शौक होता है। ये लोग स्वभाव से काफी मिलनसार तो होते ही हैं लेकिन साथ-साथ जीवन की सभी सुख-सुविधाओं को पाने की कोशिश भी करते रहते हैं। विपरीत लिंग के लोगों के प्रति इनके भीतर विशेष आकर्षण देखा जा सकता है। ये शारीरिक रूप से कमज़ोर होते हैं इसलिए कोई भी छोटी से छोटी मौसमी बदलाव के रोग भी आपको अक्सर जकड़ लेते हैं।

## शिक्षा और आय

आप कृषि बाग़वानी या फलों के बाग़ तथा ऐसे सभी कार्य जिसमें खाद्य वस्तुओं का उगाना, उन्हें विकसित व संशोधित कर बाज़ार में पहुँचाने का काम हो – वहाँ से आप धन कमा सकते हैं। वनस्पति वैज्ञान, संगीत, कला, सौंदर्य प्रसाधन, फैशन डिज़ाइनिंग, ब्यूटी पार्लर, हीरे-जवाहरात, बहुमूल्य वस्त्र, पर्यटन, परिवहन, कार उद्योग, बैंक, वित्तीय संस्थान, तैल व पेट्रोलियम उत्पाद, वस्त्र उद्योग, जल परिवहन सेवा, खाद्य पदार्थ, फ़ास्ट फ़ूड, होटल, गन्ने का व्यवसाय, केमिकल इंजीनियर, शीतल पेय या मिनरल वाटर से सम्बंधित कार्य आदि करके आजीविका कमा सकते हैं।

## पारिवारिक जीवन

आपका जीवनसाथी सुन्दर, आकर्षक और समझदार होगा तथा आपसे काफ़ी उम्मीदें रखेगा। वह आप ही की तरह भावुक और व्यवहार-कुशल होगा एवं आपका तालमेल उससे उत्तम रहेगा। आपका व्यक्तित्व मोहक व स्वभाव कोमल होगा। आप सबसे सद्व्यवहार करने वाले होंगे इसलिए

आपको आदर्श कहना उचित ही होगा। आप अपने परिवार का भरपूर ख़याल रखेंगे और घर के प्रत्येक कार्य को बख़ूबी पूरा करेंगे, जिससे आपका पारिवारिक जीवन सुखी और ख़ुशहाल रहेगा।

**प्रथम चरण :** इस चरण का स्वामी मंगल हैं। रोहिणी नक्षत्र के पहले चरण में जन्म होने के कारण जातक सौभाग्यशाली होगा. चन्द्रमा और मंगल की मित्रता के कारण धन व् ख्याति योग भी देगा। चन्द्रमा व् मंगल की दशा अन्तर्दशा में जातक की उन्नत्ति होगी लग्नेश शुक्र की दशा उन्नति में विशेष सहायक होगी।

**द्वितीय चरण :** इस चरण का स्वामी शुक्र हैं। रोहिणी नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म होने के कारण जातक को कुछ न कुछ पीड़ा बनी रहेगी। शुक्र की दशा अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नत्ति होगी।

तृतीय चरण :इस चरण का स्वामी बुध हैं।रोहिणी नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्म होने के कारण जातक डरपोक और भावुक होगा। चन्द्र व् बुध की दशा अशुभ परन्तु लग्नेश शुक्र की दशा अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नत्ति होगी।

**चतुर्थ चरण :** इस चरण का स्वामी चन्द्र हैं। रोहिणी नक्षत्र के चौथे चरण में जन्म होने के कारण जातक जातक सत्यवादी एवं सौन्दर्य प्रेमी होगा। चन्द्रमा की दशा शुभ फल देगी एवं शुक्र की दशा अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नत्ति होगी।

# 5.मृगशिरा

**राशि: वृषभ,मिथुन**

**नक्षत्र देवता: चंद्र**

**नक्षत्र स्वामी: मंगळ**

इस नक्षत्र के जातकों पर मंगल का प्रभाव होने की वजह से ये लोग स्वभाव से काफी साहसी, दृढ़ निश्चय चतुर एवं चंचल, अध्ययन में अधिक रूचि, माता पिता के आज्ञाकारी और सदैव साफ़ सुथरे आकर्षक वस्त्र पहनने वाले होते हैं। ये लोग स्थायी जीवन जीने में विश्वास रखते हैं और हर काम पूरी मेहनत के साथ पूरा करते हैं। इनका व्यक्तित्व काफी आकर्षक होता है और ये हमेशा सचेत रहते हैं। अगर कोई व्यक्ति इनके साथ धोखा करता है तो ये किसी भी कीमत पर उसे सबक सिखाकर

ही मानते हैं। बुद्धिमान होने के साथ-साथ मानसिक तौर पर मजबूत होते हैं। संगीत के शौकीन और सांसारिक सुखों का उपभोग करने वाले होते हैं।

## शिक्षा और आय

आप अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगे और लोगों को धन का कहाँ और कैसे प्रयोग करना चाहिए–इसकी सलाह भी ख़ूब देंग। लेकिन स्वयं अपने ख़र्चों पर नियत्रंण रखना आपके लिए मुश्किल होगा। कभी-कभी आप ख़ुद को आर्थिक संघर्षों से घिरा हुआ पायेंगे। आप अच्छे गायक व संगीतज्ञ, चित्रकार, कवि, भाषाविद, रोमांटिक उपन्यासकार, लेखक या विचारक साबित हो सकते हैं। भूमि-भवन, सड़क या पुल-निर्माण, यंत्र व उपकरण निर्माण, कपड़ा या वस्त्र उद्योग से जुड़े विभिन्न कार्य, फ़ैशन डिज़ाइनिंग, पशुपालन या पशुओं से जुड़ी वस्तुओं को बेचना, पर्यटन विभाग, कोई खोज कार्य, भौतिकी, खगोल या ज्योतिष शास्त्र का अध्यापन व प्रशिक्षण कार्य, क्लर्क, प्रवचनकर्ता, संवाददाता, शल्य चिकित्सक, सेना या पुलिस विभाग की सर्विस, ड्राइवर, सिविल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिक, मैकेनिकल या इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग सरीखे कार्य करके अपना जीवनयापन कर सकते हैं।

## पारिवारिक जीवन

आपका वैवाहिक जीवन सामान्यत: सुखी बीतेगा, लेकिन पत्नी को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ रह सकती हैं। दाम्पत्य जीवन का पूर्ण सुख लेने के लिए आपको हठी और संशयपूर्ण स्वभाव से हमेशा बचना चाहिए। आपके पारिवारिक जीवन में अनुकूलता धीरे-धीरे आयेगी–यदि पति-पत्नी एक दूसरे के दोष व दुर्बलताओं की अनदेखी करना सीख लें तो आप शिव-पार्वती सरीखे श्रेष्ठ युगल साबित हो सकते हैं। 32 वर्ष की आयु तक आपको जीवन में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। उसके बाद से जीवन में स्थिरता व संतोष की स्थिति आ जायेगी और 33 वर्ष से 50 वर्ष की आयु का समय आपके लिए सफल व अनुकूल साबित होगा।

**प्रथम चरण :** इसका स्वामी सूर्य है। नवमांश सिंह। जातक व्याघ्र के सामान नेत्र, सुन्दर दांत, चौड़ी नाक, भूरे बाल, कड़े नख, अहंकारी, अल्पकर्मी बातूनी होता है। जातक शिक्षित, मेघावी, होशियार, भावुक, अन्वेषक, आवेगी, सृजनात्मक होता है। पुरुष संतति की दुविधा होती है, कन्या संतति होती है। दाम्पत्य जीवन साधारण होता है।

**द्वितीय चरण :**इसका स्वामी बुध है।नवमांश कन्या। यह परिकलन, गणना, भेदभाव, फर्क, व्यंग का द्योतक है।जातक सम्मानीय, अल्प साहसी, डरपोक, दुबला-पतला, जुआरी, कुंठाग्रस्त, धन संचयी दुःख से प्रलाप करने वाला होता है। इस चरणोत्पन्न जातक प्रायोगिक, सामाजिक, गणितज्ञ, मनोरंजक, गायन और संगीत में रुचिवान अच्छा सैनिक होता है। यदि यह चरण पाप प्रभाव मे हो, तो जातक अपमिश्रण करने वाला होता है।

**तृतीय चरण :** इसका स्वामी शुक्र है। नवमांश तुला। समय मे सहमत होना या एक ही समय मे अनेक कार्य होना, अवधि विहीन प्रेम और रति, विपरीत लिंग का अत्यधिक आकर्षण,भिलाषा की पूर्ति इसके गुणधर्म है।जातक कड़े रोम वाला, चंचल, धवल नेत्र, रति निरत, कुलटा स्त्री का पति, हत्यारा, विशाल शरीर वाला होता है।जातक घमंडी, योगीन्द्र, पंडित, सामान्य स्वभावी, स्वयं का उद्योग करने वाला, अत्यधिक कामुक और कामातुर, वाचाल होता है।

**चतुर्थ चरण :** इसका स्वामी मंगल है। नवमांश वृश्चिक। यह विद्ववता पूर्ण बहस, शक या अविश्वास, आध्यात्मिक उन्नति का द्योतक है।जातक घट के सामान सिर वाला, नासिका के मध्य मे चोट लगना, धार्मिक, वाचाल, क्रियाशील, हिंसक, सेनापति होता है।जातक अच्छा अन्वेषक, अत्यधिक सन्देह करने वाला, आवेगी होता है। इन्हे अच्छे परामर्शदाता की महत्वपूर्ण निर्णय लेने मे आवश्यकता होती है।

# 6.आर्द्रा

**राशि: मिथुन**

**नक्षत्र देवता: रुद्र (शिव)**

**नक्षत्र स्वामी: राहु**

इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोगों पर आजीवन बुध और राहु ग्रह का प्रभाव रहता है। राहु का प्रभाव इन्हें राजनीति की ओर लेकर जाता है और इनके प्रति दूसरों में आकर्षण विकसित करता है। अध्ययन में रूचि अधिक और किताबों से विशेष लगाव आपकी पहचान होगी। सदैव ही अपने आस-पास की घटनाओं के बारे में जागरूक और व्यापार करने की समझ इनकी महान विशेषता है। ये लोग दूसरों का दिमाग पढ़ लेते हैं इसलिए इन्हें बहुत आसानी से बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता। दूसरों से काम निकलवाने में माहिर इस नक्षत्र में जन्में लोग अपने निजी स्वार्थ को पूरा करने के लिए नैतिकता को भी छोड़ देते हैं।

## शिक्षा और आय

आपकी शिक्षा इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, ज्योतिष शास्त्र अथवा मनोविज्ञान से सम्बंधित हो सकती है। आप इलेक्ट्रोनिक इंजीनियरिंग व कंप्यूटर सम्बंधित काम, कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के क्षेत्र, अंग्रेज़ी अनुवाद,

फ़ोटोग्राफ़ी, भौतिकी व गणित का अध्यापन, अनुसंधान या शोधकार्य, दर्शन, लेखन, उपन्यास-लेखन, विष चिकित्सा, औषधि निर्माण, नेत्र व मस्तिष्क रोग निदान, यातायात, संचार विभाग, मनोचिकित्सा, गुप्तचर व रहस्य सुलझाना, फ़ास्ट फ़ूड व मादक पदार्थ आदि से जुड़े कार्य करके आजीविका कमा सकते हैं।

## पारिवारिक जीवन

संभव है कि आपका विवाह ज़रा देर से हो। सुखी विवाहित जीवन हेतु किसी भी प्रकार के वाद-विवाद से आपको हमेशा बचना चाहिए अन्यथा वैवाहिक जीवन में दिक़्क़तें आ सकती हैं। नौकरी या व्यवसाय को लेकर आप परिवार से दूर रह सकते हैं। आपका जीवनसाथी आपका पूरा ध्यान रखेगा; वह घर के काम-काज में दक्ष होगा।

**प्रथम चरण :** इसका स्वामी गुरु है। नवमांश धनु। यह खोज-बीन, भौतिकवाद, प्रसन्नता का द्योतक है। जातक रक्त वर्ण, समशरीर, सुन्दर नाक, लम्बा चेहरा, घनी तीखी भौहे वाला होता है। वाणी प्रभावी व चातुर्यपूर्ण होती है। जातक के मन मे हमेशा संक्षोभ होता है जिससे दुविधा के कारण कुछ निश्चित नही कर पता है अतः इस तूफान के निवारण के लिए ध्यान करना चाहिए।

**द्वितीय चरण :** इसका स्वामी शनि है। नवमांश मकर। यह भौतिकवाद, निराशा, कष्ट का द्योतक है।जातक की भौंहे सुन्दर, बदन इकहरा, हल्का कृष्ण वर्ण, छोटा चहेरा, दीर्घ वक्ष, यौन वासना युक्त होता है। यह चरण अत्यधिक भ्रष्टाचार का द्योतक है। आर्द्रा नक्षत्र की ऋणात्मक विशेषता इस चरण मे सबसे ज्यादा होती है परन्तु जातक व्यवहारिक और भौतिक होता है। बुध और शनि शुभ स्थान में हो, तो भौतिकता कड़ी मेहनत के 32 वर्ष की उम्र पश्चात प्राप्त होती है।

**तृतीय चरण :** इसका स्वामी शनि है। नवमांश कुम्भ। यह विज्ञान, शोध, प्रोत्साहन, मानसिक गतिविधि का द्योतक है।जातक बड़ा मुंह, बड़ा वक्ष, मोटी कमर, लम्बी भुजा वाला, स्थूल सर वाला, कपटी, दुष्ट, उभरी शिराएं वाला, आँखो से मन की बात जानना कठिन होता है। जातक सामाजिक कार्यकर्त्ता, व्यक्तियो का शरीरिक रूप से मददगार, कर्मठ, तेज दिमाग वाला होता है।

**चतुर्थ चरण :** इसका स्वामी गुरु है। नवमांश मीन। यह संवेदना, अनुकम्पा, शांति का द्योतक है। जातक मादक नयन, वाचाल, चौड़ा ललाट, बलिष्ठ शरीर, गुलाबी होंठ, पीले दांत, जुआरी, दुष्ट व निरर्थक प्रलापी होता है। जातक भावुक, हास्यास्पद, दानी, बिना हिचकिचाहट के दूसरो धन से मददगार, स्थिर दिमाग, लाभदायक गतिविधियो मे सलग्न रहता है।

# 7.पुनर्वसु

**राशि: वृषभ,मिथुन,कर्क**

**नक्षत्र देवता: अदिती**

**नक्षत्र स्वामी: गुरू**

इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के भीतर दैवीय शक्तियां होती हैं। पुनर्वसु नक्षत्र में जन्में व्यक्ति बेहद मिलन सार, दूसरों से प्रेमपूर्वक व्यवहार रखने वाले होते हैं। इनका शरीर काफी भारी और याद्दाश्त बहुत मजबूत होती है। ये लोग काफी मिलनसार और प्रेम भावना से ओत-प्रोत होते हैं। आप कह सकते हैं कि जब भी इन पर कोई विपत्ति आती है तो कोई अदृश्य शक्ति इनकी सहायता करने अवश्य आती है। ये लोग काफी धनी भी होते हैं। आपके गुप्त शत्रुओं की संख्या अधिक होती है।

## शिक्षा और आय

आप शिक्षक, लेखक, अभिनेता, चिकित्सक आदि के रूप में नाम और मान अर्जित कर सकते हैं। ज्योतिष साहित्य के रचयिता, योग-शिक्षक, यात्रा व पर्यटन विभाग, होटल-रेस्तराँ से सम्बंधित कार्य, मनोवैज्ञानिक, धर्म गुरु, पंडित, पुरोहित, विदेश व्यापार, प्राचीन व दुर्लभ वस्तुओं के विक्रेता, पशुपालन, रेडियो, टेलीविज़न व दूरसंचार से जुड़े कार्य, डाक व कुरिअर सेवा, समाजसेवी आदि कार्य करके आप सफल जीवन जी सकते हैं।

## पारिवारिक जीवन

आप माता-पिता के बहुत आज्ञाकारी होंगे और गुरुओं और शिक्षकों का भी ख़ूब सम्मान करेंगे। आपके वैवाहिक जीवन में कुछ समस्याएँ रह सकती हैं, अतः यदि आप जीवनसाथी से तालमेल बनाकर चलें तो उत्तम होगा। जीवनसाथी को मानसिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ परेशान कर सकती हैं, परन्तु उनमें अच्छे गुण भी कूट-कूट के भरे हैं और उनका स्वरुप मनोहारी है। वे बड़े-बूढ़ों का भी सम्मान करने वाले होंगे। बच्चों और परिवार की देखभाल करने में वह निपुण होंगे।

**प्रथम चरण :** इस चरण का स्वामी मंगल हैं। मंगल और बृहस्पति दोनों मित्र हैं. फलस्वरूप ऐसा जातक अपने जीवन में अनेकों सुख भोगता है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा में गृहस्थ एवं नौकरी का सुख मिलेगा।

**द्वितीय चरण :** इसके स्वामी शुक्र है। इसमे बुध, गुरु, शुक्र का प्रभाव है। नवमांश वृषभ।यह स्थाईत्व, भौतिकता, यात्रा का द्योतक है।जातक श्याम वर्णी, मोटा शरीर, लम्बे श्वेत नेत्र, मनस्वी (मनन, चिंतन, विचार) मधुर भाषी कलाविद होता है।जातक संपत्ति का संग्रहक, बिना मेहनत किये कमाने मे कलाविद, संचार कुशल, सफल व्यापारी होता है।

**तृतीय चरण :** इस चरण का स्वामी बुध हैं।जो परस्पर विरोधी हैं। अतः पुनर्वसु नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा होने वाला जातक आजीवन रोगी होगा और कोई न कोई बीमारी उसे जावन भर परेशान करेगी। बृहस्पति एवं बुध की दशाएं नष्ट फल देंगी।

**चतुर्थ चरण :** इसके स्वामी चन्द्र है। इसमे चन्द्र, गुरु,चंद्र का प्रभाव है। नवमांश कर्क। यह माँ बनना, मातृत्व, फैलाव, पोषण का द्योतक है।जातक स्वच्छ, सुन्दर गौर वर्ण, बड़ा पेट अथवा कमर दिव्य आभा युक्त मुखड़ा, बड़े नेत्र, छोटी भुजा होती है। इस पाद में पुनर्वसु के सबसे घनात्मक प्रभाव होते है। जातक अत्यधिक देख-भाल करने वाला, दानी, आध्यत्मिक ज्ञान के लिए परिश्रमी, रचनात्मक लेखक, नाम और शोहरत वाला होता है।

# 8.पुष्य

**राशि : कर्क**

**नक्षत्र देवता: गुरु**

**नक्षत्र स्वामी: शनि**

ज्योतिषशास्त्र के अंतर्गत शनिदेव के प्रभाव वाले पुष्य नक्षत्र को सबसे शुभ माना गया है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोग दूसरों की भलाई के लिए सदैव तैयार रहते हैं और इनके भीतर सेवा भावना भी बहुत प्रबल होती है। इन्हें नित नए काम करने की प्रवृत्ति होती है और नए काम की खोज,परिवर्तन

और अधिक परिश्रम इनकी विशेषता है। ये लोग मेहनती होते हैं और अपनी मेहनत के बल पर धीरे-धीरे ही सही तरक्की हासिल कर ही लेते हैं। ये लोग कम उम्र में ही कई कठिनाइयों का सामना कर लेते हैं इसलिए ये जल्दी परिपक्व भी हो जाते हैं। चंचल मन वाले ये लोग विपरीत लिंग के प्रति विशेष आकर्षण भी रखते हैं। इन्हें संयमित और व्यवस्थित जीवन जीना पसंद होता है।

## शिक्षा और आय

आप थियेटर, कला और वाणिज्य व्यवसाय के क्षेत्र में सफल हो सकते हैं। इसके साथ ही डेयरी से जुड़े कार्य, कृषि, बाग़वानी, पशुपालन, खाने-पीने की सामग्री के निर्माण व वितरण, राजनीति, सांसद, विधायक, धर्मगुरु, परामर्शदाता, मनोचिकित्सक, धर्म व दान संस्था से जुड़े स्वयंसेवक के रूप में, अध्यापक, प्रशिक्षक, बच्चों की देखभाल के कार्य, प्ले स्कूल में कार्य, भवन निर्माण तथा आवास बस्ती से जुड़े कार्य, धार्मिक व सामाजिक उत्सवों के आयोजनकर्ता, शेयर बाज़ार, वित्त विभाग, जल प्रधान कार्य, सेवा से जुड़े काम, माल ढोने जैसे श्रमप्रधान कार्य करके जीवनयापन कर सकते हैं।

## पारिवारिक जीवन

आप अपने जीवनसाथी और बच्चों के साथ रहना चाहेंगे, मगर नौकरी या व्यवसाय के चलते अपना अधिकतर समय अपने परिवार से दूर बिताएंगे। इसी वजह से आपका पारिवारिक जीवन कुछ समस्याग्रस्त रह सकता है, परन्तु आपका जीवनसाथी आपके प्रति समर्पित रहेगा और आपकी अनुपस्थिति में वह परिवार का ध्यान अच्छी प्रकार से रखेगा। 33 वर्ष की आयु तक आपके जीवन में कुछ संघर्ष होने की संभावना है, परन्तु 33 वर्ष की अवस्था से आपकी चतुर्मुखी प्रगति होगी।

**प्रथम चरण :** इसका स्वामी सूर्य है। इसमे चन्द्र, शनि, सूर्य का प्रभाव है। नवमांश सिंह। यह तीव्र प्रकाश का आकर्षण, उपलब्धता, सम्पदा, सकारात्मकता, पैतृक गर्व का द्योतक है। जातक लाल गुलाबी कान्ति वाला, बिलाव (बिल्ली) के सामान चेहरा वाला, लम्बे हाथ तथा पैर, विवाह के लिए प्रवासी, कला प्रिय होता है। जातक जबाबदारी के लिए विश्वनीय, व्यवसायिक जीवन के लिए गंभीर, परिवार के प्रति चिन्तित, विवाह मे अड़चन, दाम्पत्य जीवन दुःखद होता है। कोई-कोई जातक मजदुर होता है।

**द्वितीय चरण :** इस चरण का स्वामी बुध हैं। पुष्य नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्मा व्यक्ति एक से अधिक स्रोतों से धन अर्जित करता है। अपनी वाक्पटुता के कारण पक्ष विपक्ष दोनों से ही मधुर सम्बन्ध बना कर रखता है।

**तृतीय चरण :** इसका स्वामी शुक्र है। इसमे चन्द्र,शनि,शुक्र का प्रभाव है। नवमांश तुला। यह आराम,सुविधा, समाज प्रियता,अनुकूलता,अनुरूपता,सतही प्रगाढ़ता का द्योतक है।जातक श्याम वर्णी,स्थूल देह,धनुषाकार भौंहे,सुंदर नाक व आंख,विलासी, क्षीणभाग्य,जाति बन्धु का हित करने वाला

होता है।जातक सामाजिक, यौन क्रिया का इच्छुक,पारिवारिक जीवन की अपेक्षा व्यावसायिक जीवन चाहने वाला,जीवन मे आराम और सुविधा भोगने वाला कार्य के प्रति लगनशील होता है।

**चतुर्थ चरण :** इस चरण का स्वामी मंगल हैं। पुष्य नक्षत्र के चौथे चरण में जन्मा व्यक्ति धार्मिक स्वभाव वाला होता है अतः जातक धार्मिक और परोपकारी कार्यों में पूर्ण रूचि दिखाते हैं। ऐसा जातक जिस भी कार्य में हाथ डालता है उसे सफलता अवश्य मिलती है।

# 9.अश्लेषा नक्षत्र

**राशि: कर्क**

**नक्षत्र स्वामी: बुध**

**नक्षत्र देवता: सर्प**

यह नक्षत्र विषैला होता है और इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के भीतर भी विष की थोड़ी बहुत मात्रा अवश्य पाई जाती है। लग्न स्वामी चन्द्रमा के होने के कारण ऐसे जातक उच्च श्रेणी के डॉक्टर, वैज्ञानिक या अनुसंधानकर्ता भी होते हैं। अश्लेषा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों का प्राकृतिक गुण सांसारिक उन्नति में प्रयत्नशीलता, लज्जा व सौदर्योपासना है। इस नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आँखों एवं वचनों में विशेष आकर्षण होता है। ये लोग कुशल व्यवसायी साबित होते हैं और दूसरों का मन पढ़कर उनसे अपना काम निकलवा सकते हैं। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोगों को अपने भाइयों का पूरा सहयोग मिलता है। चन्द्रमा के औषधिपति होने के कारण इस नक्षत्र में जन्मे जातक बहुत चतुर बुद्धि के होते हैं।

## शिक्षा और आय

आप अच्छे लेखक हैं। अगर आप अभिनय के क्षेत्र में जाते हैं तो सफल अभिनेता बन सकते हैं। कला अथवा वाणिज्य के क्षेत्र में भी आप जा सकते हैं और नौकरी की बजाय व्यवसाय में अधिक सफल हो सकते हैं। अतः संभव है कि आप अधिक समय तक नौकरी न करें। यदि नौकरी करेंगे तो साथ-ही-साथ किसी व्यवसाय से भी जुड़े रह सकते हैं। भौतिक दृष्टि से आप काफ़ी समृद्ध होंगें तथा धन-दौलत से परिपूर्ण होंगे। कीटनाशक और विष सम्बन्धी व्यवसाय, पेट्रोलियम उद्योग, रसायन शास्त्र, सिगरेट व तम्बाकू सम्बन्धी व्यवसाय, योग प्रशिक्षक, मनोविज्ञान, साहित्य, कला व पर्यटन से जुड़े

कार्य, पत्रकारिता, लेखन, टाइपिंग, वस्त्र निर्माण, नर्सिंग, स्टेशनरी के सामान उत्पादन और बिक्री करके सफल होने की अधिक संभावना है।

## पारिवारिक जीवन

आपका कोई साथ दे या न दे, परन्तु भाइयों से पूरा सहयोग मिलेगा। आप परिवार में सबसे बड़े हो सकते हैं और परिवार में बड़ा होने के कारण परिवार की सारी ज़िम्मेदारी आप पर होने की संभावना है। जीवनसाथी की कमियों को अनदेखा करना ही उचित है अन्यथा वैचारिक मतभेद रह सकते हैं। आपका स्वभाव और व्यवहार सभी का मन मोह लेने वाला होगा। अगर इस नक्षत्र के अंतिम चरण में आपका जन्म हुआ है तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे।

**प्रथम चरण :** इस चरण का स्वामी गुरु हैं। अश्लेशा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति अत्यधिक धनि होता है,परन्तु आमदनी अनैतिक कार्यों से होती है। विदेशों में भाग्योदय एवं वृद्धावस्था में अंग भंग का खतरा रहता है। धार्मिक,राजनितिक और सामाजिक कार्यों में पूर्ण रूचि परन्तु सफलता के लिए अन्याय और असत्य का सहारा भी लेते हैं। सच्ची मित्रता में कतई विश्वास नहीं है।

**द्वितीय चरण :**इसका स्वामी शनि है। इसमे चन्द्र, बुध, शनि का प्रभाव है। नवमांश मकर। यह तृप्ति, लोगो से सौदा या व्यवहार, ठगबाजी, ईच्छा, स्वत्व उन्मुखता, वित्त का द्योतक है। जातक छितरे अल्प रोम युक्त, स्थूल देह, दीर्घ सर व जांघ, रक्षक अथवा चौकीदार, कौआ के सामान चौकन्ना, स्फूर्तिवान होता है।नक्षत्र के नकारात्मक लक्षण इस चरण मे देखे जाते है। जातक अत्यधिक मक्कार, बेहिचक दूसरो के लक्ष्य को रोकने वाला, अविश्वनीय होता है। जातक को काबू मे रखना अत्यंत दुष्वार होता है। इसका खुद का मकान नही होता है यदि होता भी है तो किराये के मकान मे रहता है।

**तृतीय चरण :** इस चरण का स्वामी शनि हैं। अश्लेशा नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति धन एकत्रित करने में सदा असफल रहता है। पद प्रतिष्ठा में कोई कमी नहीं होती है परन्तु उसके हिसाब से धन प्राप्ति हेतु सरे प्रयत्न विफल होते हैं।

**चतुर्थ चरण :** इसका स्वामी गुरु है। इसमे चन्द्र, बुध, गुरु का प्रभाव है। नवमांश मीन। यह भ्रम, अति प्रयास या संघर्ष (ग्रीक पौराणिकता अनुसार इसमे सर्प का कत्ल किया जाता है) खतरनाक धोखा, आमना-सामना, पिता के स्वास्थ पर दुष्प्रभाब का द्योतक है। जातक गौरवर्ण, मस्य सामान नेत्र, कोमल उदर, बड़ा वक्ष, लम्बी दाड़ी, पतले होंठ, बड़ी जांघे पतले घुटने वाला होता है।इस पाद का जातक दूसरो को शिकार बनाने के बजाय खुद शिकार होता है। जीवन में सम्बन्ध बनाये रखने के लिये कठिन परिश्रम करता है। नक्षत्र दुष्प्रभाव मे हो, तो गंभीर मनोरोग होते है।

# 10.मघा

**राशि: सिंह**

**नक्षत्र देवता: पितर**

**नक्षत्र स्वामी: केतु**

इस नक्षत्र को गण्डमूल नक्षत्र की श्रेणी में रखा गया है। सूर्य के स्वामित्व के कारण ये लोग काफी ज्यादा प्रभावी बन जाते हैं। इनके भीतर ईश्वरीय आस्था बहुत अधिक होती है। इनके भीतर स्वाभिमान की भावना प्रबल होती है और बहुत ही जल्दी इनका दबदबा भी कायम हो जाता है। ये कर्मठ होते हैं और किसी भी काम को जल्दी से जल्दी पूरा करने की कोशिश करते हैं। ये ठिगने कद के साथ सुदृढ वक्षस्थल, मजबूत झंघा, वाणी थोड़ी कर्कश एवं थोड़ी मोटी गर्दन के होते हैं। इनकी आँखें विशेष चमक लिए हुए, चेहरा शेर के समान भरा हुआ एवं रौबीला होता है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति प्रायः अपने पौरुष और पुरुषार्थ के प्रदर्शन के लिए सदा ललायित रहते हैं।

## शिक्षा और आय

आपके पास धन-सम्पत्ति और सेवक होंगे। आप दुर्लभ वस्तुओं के व्यापारी, राज्य स्तर के उच्च अधिकारी, बड़े व्यापारी, वकील, न्यायाधीश, राजनीतिज्ञ, इतिहासकार, प्रवचनकर्ता, कलाकार, ज्योतिषी, भवन का डिज़ाइन बनाने वाले, प्रशासक, किसी संस्थान के अध्यक्ष, प्राचीन सभ्यता और संस्कृति से जुड़े व्यवसाय आदि करके सफल हो सकते हैं।

## पारिवारिक जीवन

आप प्राय: ख़ुशहाल और आनंदपूर्ण वैवाहिक जीवन जिएंगे और आपकी संतानें भी भाग्यशाली होंगी। जीवनसाथी काफ़ी समझदार और दैनिक कार्यों में निपुण होगा। वह परिवार की ज़िम्मेदारी भी बख़ूबी पूरी करेगा।

**प्रथम चरण :** इस चरण का स्वामी सूर्य हैं।इस नक्षत्र में जन्मा जातक पंडित अर्थात अपने क्षेत्र का विद्वान् होगा इसका कारक इस चरण का नवांशेश गुरु है। नक्षत्र स्वामी एवं सूर्य दोनों ही विद्या के

लिए शुभ गृह है।दोनों का चन्द्र पर प्रभाव जातक को पंडित बनाएगा। मंगल की दशा अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा ।गुरु की दशा शुभ फल देगी।

**द्वितीय चरण :**इइस चरण का स्वामी शनि हैं. इस नक्षत्र में जन्मा जातक राजा या राजा समान वैभवशाली एवं पराक्रमी होता है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी।शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

**तृतीय चरण :**इस चरण का स्वामी शनि हैं। इस नक्षत्र में यदि चन्द्रमा भी है तो व्यक्ति हर हाल में अपने शत्रुओं पर विजयी होगा तथा प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेगा। लग्नेश बुध की दशा अच्चा फल देगी, शनि अनिष्ट फल नहीं देगा अपिटी शुक्र व् शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

**चतुर्थ चरण :** इस चरण का स्वामी गुरु हैं। इस नक्षत्र में जन्मा जातक धार्मिक स्वभाव वाला, अपने संस्कारों के प्रति आस्थावान एवं सभ्य होगा।शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं बृहस्पति की दशा उत्तम फल देगी।

# 11.पूर्वाफाल्गुनी

**राशि: सिंह**

**नक्षत्र देवता: भग**

**नक्षत्र स्वामी: शुक्र**

यदि आपका जन्म पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में हुआ है तो आप ऐसे भाग्यशाली व्यक्ति हैं जो समाज में सम्माननीय हैं और जिनका अनुसरण हर कोई करना चाहता है। परिवार में भी आप एक मुखिया की भूमिका में रहते हैं। ऐसे लोगों को संगीत और कला की विशेष समझ होती है जो बचपन से ही दिखाई देने लगती है। ये लोग नैतिकता और ईमानदारी के रास्ते पर चलकर ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। शांति पसंद होने की वजह से किसी भी तरह के विवाद या लड़ाई-झगड़े में पड़ना पसंद नहीं करते। इनके पास धन की मात्रा अच्छी खासी होती है जिसकी वजह से ये भौतिक सुखों का आनंद उठाते हैं। ये लोग अहंकारी प्रवृत्ति के होते हैं।

## शिक्षा और आय

रोज़गार के क्षेत्र में आप अपने कार्य बदलते रहेंगे। आयु के 22, 27, 30, 32, 35, 37 और 44 वर्ष नौकरी और व्यवसाय के लिए महत्वपूर्ण रहेंगे। आप सरकारी कर्मचारी, उच्च अधिकारी, स्त्रियों के वस्त्राभूषण व सौंदर्य-प्रसाधन के निर्माता या विक्रेता, जनता का मनोरंजन करने वाले कलाकार, मॉडल, फ़ोटोग्राफ़र, गायक, अभिनेता, संगीतज्ञ, विवाह के लिए वस्त्राभूषण या उपहार सामग्री का व्यापार करने वाले, जीव विज्ञानी, आभूषण निर्माता, सूती, ऊनी या रेशमी वस्त्र के कार्य करने वाले आदि हो सकते हैं।

## पारिवारिक जीवन

आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा। जीवनसाथी और बच्चे अच्छे स्वभाव के मिलेंगे और उनसे भरपूर सुख प्राप्त होगा। आपका जीवनसाथी कर्तव्यनिष्ठ होगा और अपने परिवार के लिए सब कुछ न्योछावर करने को तत्पर रहेगा। आप प्रेम-विवाह भी कर सकते हैं या किसी पूर्व परिचित व्यक्ति से विवाह कर सकते हैं।

**प्रथम चरण :** इसका स्वामी सूर्य है। नवमांश सिंह। यह स्व प्रतिष्ठा, वैभव, शान का द्योतक है। जातक घड़ियाल समान सिर, अल्प केश, श्वेत आंखे, लोमड़ी सामान शरीर, लम्बा पेट, साहसी, मोटे चौड़े तीखे दांत वाला होता है।जातक साहसी, पत्नी युक्त, माता का भक्त होता है। विपरीत लिंग से अड़चन, रसायन या हॉस्पिटल से आजीविका होती है।

**द्वितीय चरण :** इसका स्वामी बुध है। नवमांश कन्या। यह धैर्य, संयम, व्यापार, उद्योग का द्योतक है। जातक अल्प रोम, कोमल मटमैले नेत्र, लम्बा, श्याम वर्णी, स्त्री सुलभ सौन्दर्य युक्त, चतुर, शेखी मारने वाला, कार्य साधने में निपुण होता है। जातक महा क्रोधी, जीवन के मध्य मे वासना युक्त, जीवन के अंत मे शांत और चिंता मुक्त होता है।

**तृतीय चरण :** इसका स्वामी शुक्र है। नवमांश तुला। यह सृजन, तनाव मुक्ति, समान विचार, यात्रा, परिष्कृत, प्रशंसा, परामर्श का द्योतक है। जातक लम्बा मुंह, लम्बा मोटा सिर, हृष्ट-पुष्ट, मांसल देह, श्याम वर्ण, घने रोम, स्त्रियो से कपटी, कूटनीतिज्ञ, ठग, कठोर भाषी होता है।जातक आक्रामक, संताप रहित, अनेक जबाबदारियो से परिपूर्ण होता है। घर मे चोरी होती है, परन्तु नुकसान कम होता है या चोरी गया मॉल मिल जाता है।

**चतुर्थ चरण :** इसका स्वामी मंगल है। नवमांश वृश्चिक। यह लालसा, वीरता, रंग रूप का द्योतक है। जातक के जीवन मे कलह विशेष होता है। यदि जन्मांग मे सूर्य गुरु अच्छी स्थति मे हो, तो कलह कम होता है। जातक शिष्ट भाषी, स्थिर अंग, गंभीर स्वभाव, कपट दृष्टि, निषिद्ध कार्य करने वाला, गुप्तचर, कुशल होता है।